VOL- XII | ISSUE- II | FEBRUARY | 2025 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 8.379 | ISSN 2349-638x

दिनकर के काव्य में नारी चित्रण

डॉ. योगिता अपूर्व हिरे
लोकनेते व्यंकटराव हिरे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
पंचवटी, नासिक -03
Email: - hodhindi_lvh@mgvnasik.org

सारांश :-

कविवर रामधारी सिंह 'दिनकर' जी महाकवि होने के साथ-साथ एक उच्च कोटि के विचारक भी है, जिन्होंने अपने युग की समस्याओं और मानव जीवन की चिरंतन समस्याओं पर मौलिक रुप से विचार किया हैं। वास्तव में दिनकर जी की विचारधारा किसी एक राजनीतिक या दार्शनिक परंपरा की अनुवर्तिनी नहीं है। मानव जीवन के सभी क्षेत्रों पर कवि ने निर्भीक होकर अपने विचार व्यक्त किए हैं। उनकी सामाजिक चेतना अत्यंत प्रखर है। अर्थात समाजवाद में आस्था होने के कारण उनकी सामाजिक चेतना दलित-पीडित के साथ, नारी के प्रति संवेदना के रुप में अभिव्यक्त हुई है । समय-समय पर अपनी नारी संबंधी अवधारणाओं को अपने संपूर्ण साहित्य के माध्यम से पूर्ण स्पष्टता से अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। उनकी नारी विषयक धारणा के संबंध में डॉ. ज्ञान अस्थाना का मंतव्य है-"दिनकर ने नारी को किशोरी-बाला, रुपा, प्रियसी, पत्नी, पतिता, देवी, कल्याणी-गृहिणी, माता आदि रुपो में देखने का प्रयत्न किया है। उन्होंने बार-बार इस बात पर बल दिया है कि जब समाज में निवृत्तिवादी विचारधाराएँ प्रबल रहीं, नारी का सम्मान घटा और जब-जब प्रवृत्तिवाद का जोर रहा, नारी की प्रतिष्ठा बढी है।" दिनकर जी के नारी विषयक विचार 'रेणुका', 'रसवंती', 'नील कुसुम', 'सीपी और शंख' नामक काव्य संग्रहों की अनेकानेक स्फुट कविताओं के साथ 'रश्मिरथी' और 'उर्वशी' जैसे प्रबंध काव्यों में विस्तार से निरुपित हुए हैं। अध्ययन-अनुशीलन की सुविधा के लिए दिनकर जी की नारी विषयक धारणा तथा विचारों को दो भागो में विभक्त किया जा सकता है –

(१) स्फुट तथा मुक्तक कविताओं में नारी संबंधी विचार, (२) प्रबंध काव्यों में नारी विषयक धारणा ।

स्फुट कविताओं में दिनकर जी के नारी संबंधी विचार -

दिनकर जी की नारी विषयक धारणा की दृष्टी से उनकी प्रथम काव्य रचना 'रेणुका' की 'राजा-रानी' तथा, 'विधवा' आदि कविताएँ उल्लेखनीय हैं, जिसमें नारी के प्रति कवि का दृष्टिकोण संवेदनापूर्ण रहा है। 'राजा-रानी' कविता में पुरुष और नारी के संबंधों की चर्चा के साथ नारी की विवशता और त्याग का बडा ही मनोहारी वर्णन है। इसमें राजा और रानी को 'वसंत' और 'वर्षा' के प्रतीक के माध्यम से नर और नारियों की वृत्तियों पर प्रकाश डाला है। जैसे-

"राजा वसंत, वर्षा ऋतुओं की रानी,
लेकिन दोनों की कितनी भिन्न कहानी ।" (रेणुका पृ. ४१)

इस कविता में नारी का अबला रुप है। नारी के प्रति कवि के मन में अपार श्रद्धा है इसलिए नारी की करुण दशा से विगलित होकर वे लिखते हैं-

"लेखनी लिखे, मन में जो निहित व्यथा है, रानी की सब दिन गीली यही कथा हैं। त्रेता के राजा क्षमा करें यदि बोले, राजा-रानी की युग से यही प्रथा है।" (रेणुका पृ. ४२)

'विधवा' कविता में कवि ने विधवा नारी का करुण चित्र प्रस्तुत करते हुए समाज की इस भीषण प्रथा के प्रति व्यंग्य किया है 'रसवंती' काव्य संग्रह की अधिकांश कविताएँ श्रृंगार और उसके प्रमुख आलंबन नारी से संबंधित है। इनमें 'गीत', 'अगीत', 'प्रीती', 'दाह की कोयल', 'रास की मुरली', 'सावन में', 'प्रतीक्षा', 'बालिका से वधू', 'पुरुष-प्रिया' आदि कविताएँ श्रृंगारीक हैं। इसके साथ रसवंती में नारी संबंधी दो कविताएँ हैं। प्रथम कविता में कवि ने नारी को प्रेरणा और शक्ति माना हैं। वह ज्ञानी और कलाकार की प्रेरणा है। पुरुष

ने इसी नारी के लिए कभी शिव-धनुष्य तोडा, मत्स्य-भेदन किया, कनक-मृग के पीछे दौडा, तो कभी कामिनी की एक मुस्कान पर ऋषियों ने सिध्दियाँ लुटा दी । कवि की दृष्टी से मनुष्य के विचारों का उदात्तीकरण नारी के सौंदर्य और प्रेरणा से होता है। यथा-

"दृष्टी तुमने फेरी जिस ओर, गई खिल कमल-पंक्ति अम्लान,
हिंस्र मानव के कर से त्रस्त शिथिल, गिर गये धनुष्य औ
बाण।" (रेणुका पृ.३७)

'रसवंती' की 'नारी' नामक दूसरी कविता में कवि की नारी विषयक दृष्टी सामाजिक परिपार्श्व में व्यक्त हुई है। इस में नारी के तीनों रुपों-आधुनिका, रक्षणिया और माता-रुप की अभिव्यक्ति हुई है। इसी कविता के दूसरे खण्ड में भारतीय नारी के उस रक्षणीय और अबला रुप का चित्रण हुआ है, जिस की करूण दशा को देख कर कवि लिखते हैं-

"जी करता है, अपना पौरुष, इज्जत इसे उढा दूँ, या कि जगा दूँ,
उसके भीतर की उस लाल शिखा को
आँखों में जिसके जलने से दिशा काँप जायेंगी।" (रेणुका पृ.४९)

कविता के तीसरे खण्ड में सद्यः माता का चित्र प्रस्तुत करते हुए कवि का मन मातृत्व की गरिमा से भर गया है। दिनकर जी का अटूट विश्वास है कि, नारी की पूर्णता माँ बनने में है। यथा-

"नारी की पूर्णता पुत्र को स्वानुरुप करने में,
करते हैं साकार पुत्र ही माता के सपने को।"
(रेणुका पृ.५१)

'रसवंती' में प्रकाशित 'पुरुष प्रिया' नामक कविता में कवि नारी के सौंदर्य का वर्णन करते हैं, जिसे देख कर पुरुष अपने समस्त पौरुष को भूल जाता है। इसी प्रकार 'बालिका से वधू' रचना में कवि ने यौवन की देहरी पर पाँव रखनेवाली किशोरी का सौदर्याकन किया है।

'नील कुसुम' में संग्रहित 'अर्धनारीश्वर', 'नग्नता', 'नर्तकी' आदि कविताएँ सामाजिक तथा विचार प्रधान है। इन कविताओं में दिनकर जी आधुनिक नारी के भिन्न-भिन्न स्वभावों की चर्चा करते हैं। इसके साथ 'सीपी और शंख' ग्रंथ की 'कवि और प्रेमी', 'काढ लो दोनों नयन मेरे', 'प्रेम', 'नारी', 'मानिनी' आदि कविताओं में प्रेम तथा नारी की श्रृंगारिकता की भावना है। इस कृति में कवि ने नारी के गौरव का गान भी किया है। इन्हें नारी में सभी गुण दिखाई देते हैं। नारी के गुणों का वर्णन करते हुए वे लिखते हैं-

"वह नारी है, केवल उसके ही पास बंधु,
सौंदर्य, शांति, कविता, तीनों का मिश्रण है।"
(सीपी और शंख, पृ.४०)

तात्पर्य, कवि दिनकर जी ने अपनी स्फुट कविताओं में नारी के विभिन्न रुपों का जो चित्रण प्रस्तुत किया है, उसमें भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में उसके हृदय में उत्पन्न होनेवाली भावनाओं का निरुपण किया है। अपने सभी रुपों में यथा प्रेमिका, पत्नी, गृहिणी और माता आदि में नारी पुरुष के लिए प्रेरणादायी सिध्द हुई है।

प्रबंध काव्यों में नारी विषयक धारणा -

'रश्मिरथी' में कवि ने 'कुंती-कर्ण भेंट प्रसंग' में कुंती के चरित्र के माध्यम से आधुनिक ममतामयी तथा पीडिता नारी का दुःख प्रस्तुत किया है। 'रश्मिरथी' की कुंती एक अभागीन नारी है। जब वह कुमारी थी तब कर्ण का जन्म हुआ था। इस रहस्य को कर्ण-भेंट के समय वह अपना अपराध स्वीकार करती हुई नारी जीवन की विडंबना और पराधीनता को व्यक्त करती है-

"बेटा, धरती पर बडी दीन है नारी,
अबला होती. सचमुच योषिता कुमारी ।
है कठिन बंद करना समाज के मुख को
सिर उठा न पा सकती पतिता निज सुख को।"
(रश्मिरथी पृ. ७९)

इन पंक्तियों में कुंती ने भारतीय नारी की दीन-हीन अवस्था और पराधीनता का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है। कुंती के माध्यम से कवि ने कुंवारी माता की समस्या को उठाया है। आज हमारे समाज में कुंवारी माताओं की नियति यही है कि वे जीवन भर चीख-पुकार एवं उपेक्षा से भरा जीवन व्यतीत करती हैं। कवि ने कुंती के माध्यम से कुंवारी माता की अंतर्व्यथा को व्यक्त किया है।

भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित कृति 'उर्वशी' में दिनकर जी के नारी संबंधी विचार परिपक्व एवं सुव्यवस्थित रुप में व्यक्त हुए हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि, नारी के समस्त रुप और गुणों से कवि परिचित हैं और उनका स्पष्ट वर्णन ही इस काव्य कृति का मुख्य उद्देश्य है। 'उर्वशी' की भूमिका में दिनकर जी लिखते हैं-"नारी के भीतर एक और नारी है, जब शरीर की धारा, उछालते उछालते, उसे मन के समुद्र में फेंक देती है, जब दैहिक चेतना के परे, वह प्रेम की दुर्गम समाधि में पहुँच कर निस्पंद हो जाती है।" नारी का यह विशेष स्वरुप है और इसको वही पहचान सकता है, जिसने नारी के शरीर के सुंदर आवरण को विदीर्ण कर उसकी आत्मा

में प्रवेश पाने में सफलता पाई हो। दरअसल, 'उर्वशी' का कवि नारी की आत्मा में प्रवेश करने में समर्थ रहे हैं और उसके वास्तविक रुप को निरुपित करने में भी सफल हुए हैं।

'उर्वशी' में कवि द्वारा व्यंजित नारी के विविध रुप इस प्रकार हैं (१) नारी का उच्छृंखल-रुप, (२) नारी का प्रेमिका-रुप, (३) नारा का पत्नी-रुप, (४) नारी का मातृ-रुप । (५) नारी का गृहिणी-रुप ।

१) नारी का उच्छृंखल-रुप -

इसके अंतर्गत अप्सराओं की मनोवृति का वर्णन मिलता है। ये अप्सराएँ अपूर्व सुंदरी, मनमोहिनी, मुक्त एवं स्वच्छंद प्रेम की जीवित प्रतिमाएँ एवं कामदेव के मन की कामनाएँ हैं। इन्हें किसी प्रकार का बंधन स्वीकार नहीं है। इनका जन्म सब के मन में मोद भरने के लिए हुआ है। 'उर्वशी' के प्रथम अंक में मेनका, रंभा, सहजन्या आपस में बातें करती हुई अपने स्वच्छंद रुप की चर्चा करती हैं। यथा-

"जनमी हम किस लिए? मोद सबके मत में भरने को,
किसी एक को नहीं मुग्ध, जीवन अर्पित करने को ।"

(उर्वशी पृ.१०)

२) नारी का प्रेमिका रुप

'उर्वशी' के तृतीय अंक में प्रेम, प्रेमी और प्रेमिका की अपूर्व व्याख्या की गयी है। प्रेमी महाराज पुरुरवा और प्रेमिका है उर्वशी 'उर्वशी' में उर्वशी का पूर्ण मानवी और प्रेमिका का रुप स्थान-स्थान पर वर्णित हुआ है। वह पुरुरवा के गुणों से आकर्षित होकर हृदय समर्पित कर देती है। पुरुरवा उर्वशी से प्रेम करता है, लेकिन उसका मन आलिंगन से निकल कर कहीं दूर चला जाता है। उर्वशी जैसी चतुर नारी इस रहस्य को समझ लेती है। वह पूर्ण आनंद की आकांक्षी है, इसलिए पुरुरवा से कहती है-

"तन से मुझको कसे हुए अपने दृढ आलिंगन में,
मनसे, किंतु विषण्ण दूर तुम कहाँ चले जाते हो ।
बरसा कर पीयूष प्रेम का, आँखों से आँखों में,
मुझे देखते हुए कहाँ तुम जाकर खो जाते हो।"

(उर्वशी पृ. ३५)

३) नारी का पत्नी-रुप -

नारी जब किसी एक व्यक्ति को अपना सर्वस्व समर्पण करके आजीवन उसी के साथ बंध जाती है, तब उसका रुप पत्नी का हो जाता है। 'उर्वशी' में दो पत्नियाँ चित्रित की गयी है। पहली है औशीनरी जो महाराजा पुरुरवा की पत्नी है और दूसरी है सुकन्या, जो महर्षि च्यवन की धर्मपत्नी है। दोनों के जीवन में बडा अंतर है। औशीनरी दुःखी और पति द्वारा परित्यक्ता है, जबकि सुकन्या अपने पति की प्रिय सहचरी है। 'उर्वशी' के दूसरे अंक में औशीनरी का दुखी जीवन दिखाया है। औशीनरी पति-प्रेम से वंचिता है। पति के विछोह पर वह गुप्त जी की यशोधरा की तरह रोती है। उसका आक्रोश और क्रोध उपालंभबनकर उर्वशी पर फूट पडता है। यथा-

"हाय! मरण तक जी कर मुझको हलाहल पीना है,
जानें, इस गणिका का मैंने कल क्या अहित किया था।"

(उर्वशी पृ. २२)

उर्वशी में चित्रित दूसरी नारी है सुकन्या। वह एक आदर्श पत्नी है। सुकन्या में पत्नी-रुप के साथ ही सती साध्वी के स्वरुप के दर्शन होते हैं। वह पति को ही आनंद धाम मानती है। उसे गृहस्थी में ही सुख और संतोष प्राप्त है। उसे अपने पति महर्षि च्यवन पर गर्व है। यथा

"चित्र लेखे ! मुझको अपने महर्षि भर्ता पर,
ग्लानि नहीं, निस्सीम गर्व है।" (उर्वशी पृ. ८२)

४) नारी का मातृ-रुप -

दिनकर जी ने नारी-रुपों के अंतर्गत सर्वाधिक महता एवं श्रेष्ठता मातृ-रुप को ही प्रदान की है। मातृत्व की गरिमा का उल्लेख उर्वशी में सर्वत्र दृष्टव्य है। नारी के माता रुप की श्रेष्ठता मेनका और रंभा जैसी अप्सराएँ भी स्वीकार करती है। 'उर्वशी' में माता-रुप में तीन पात्र मिलते हैं उर्वशी, औशीनरी और सुकन्या । इनमें जननी के रुप में केवल उर्वशी ही प्रस्तुत की है। आयु उसका पुत्र है, जिस पर तीनों नारियों उर्वशी, सुकन्या और औशीनरी की वत्सलता फूट पडती है।
उर्वशी अपने मातृत्व पर गर्व करते हुए कहती है-

"बेटी नहीं हुई तो क्या! अब माँ तो हूँ मानव की,
नहीं देखती, रत्नमयी को कैसा लाल दिया है।"

(उर्वशी पृ. १२०)

सुकन्या और औशीनरी भी मातृत्व की समर्थक है, जब वे आयु को देखती है, तब उनका मातृत्व उमड़ पडता है।

५) नारी का गृहिणी-रुप -

'उर्वशी' में गृहिणी का स्वरुप औशीनरी और सुकन्या के माध्यम से व्यक्त हुआ है। औशीनरी वह शांत संतोष पूर्ण गृहिणी है, जो पति के प्रत्येक कार्य को यहाँ तक कि उसके परनारी के संग विहार को भी सहन कर लेती है। पति की सहचरी बनने की इच्छा उसमें नहीं है। वह उसकी अनुचरी बनकर ही संतुष्ट हो जाती है। उसके संयम की पराकाष्ठा है। वह मदनिका से कहती है-

"गृहिणी जाती हार दाँव संपूर्ण समर्पण करके,
जयिनी रहती बनी अप्सरा ललक पुरुष में भरके ।
जीत गयी अप्सरा, सखी! मैं नारी बनकर हारी!"

(उर्वशी पृ.२५)

इस प्रकार दिनकर जी ने अपनी स्फुट कविताओं के साथ-साथ प्रबंध काव्यों में नारी के विविध रुपों का जो विमर्श किया है, वह भारतीय परंपरा के अनुकूल है। कविवर दिनकर द्वारा आलेखित नारी के विविध रुपों का परिचय प्राप्त करने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकलता है कि, दिनकर जी ने नारी के विविध रुपों को अपनाते हुए अपनी संपूर्ण श्रद्धा एवं आस्था उसके मातृत्व में ही व्यक्त की है। नारी के विभिन्न रुपों में यथा प्रेमिका, पत्नी, गृहिणी एवं माता आदि में नारी पुरुष के लिए उपयोगी सिद्ध होती है। वास्तव में नारी के संपर्क में आने पर ही पुरुष के जीवन में सुश्रृंखलता आती है। तात्पर्य कवि का यह नारी विषयक विमर्श भारतीय आदर्श और संस्कृति के अनुरुप है।

संदर्भ ग्रंथ -

१) मूल ग्रंथ रेणुका, रसवंती, नील कुसुम सीपी और शंख, रश्मिरथी, उर्वशी ।

२) सहायक ग्रंथ -

१) दिनकर काव्य-कला और दर्शन डॉ. प्रतिमा जैन
२) उर्वशी संवेदना और शिल्प डॉ. टीकाराम शर्मा
३) रामधारी सिंह दिनकर के साहित्य में जीवन-मूल्य डॉ. शोभा सूर्यवंशी
४) समीक्षा (दिनकर स्मृति अंक) सं. डॉ. गोपालराय, स. १९७५ ई.

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com